Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 99-105

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों में लोक परम्पराओं का वास

[1]दीपक कुमार, [2]डॉ.ममता रानी
[1]शोधछात्र, [2]सहायक प्राध्यापक
[1,2]हिंदी विभाग,कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर छत्तीसगढ़

सारांश– भारत के मानचित्र पर आदिवासी बाहुल्य पिछड़े राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ की पहचान रही है। शिक्षा के साधनों का नितांत अभाव भी यहां रहा है। इसके बावजूद अनादि काल से छत्तीसगढ़ का कथा संसार का आकार व्यापक है। यहां की लोक संस्कृति संग जनजातीय संस्कृति बेहद समृद्ध और जनप्रिय है। कथक्कड़ों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती यहां की कथाएं अपनी रोचकता के साथ अजर अमर बनी हुई हैं। लोक कथाओं की भूमिका समाज को सुशिक्षित,संगठित करने सहित सुसंस्कारी,साहसिक बनाने में महत्वपूर्ण रही है। इसे हमारे देश के प्रबुद्ध साहित्यकारों ने समय समय पर अपनी रचना और अपनी वाकपटुता से उजागर किया। एक बार किसी कार्यक्रम में राष्ट्रकवि दिनकर और प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू पहुंचे। उस वक्त सीढ़ियां चढ़ते हुए नेहरू जी लड़खड़ा कर गिरने लगे तो दिनकर जी ने उनका हाथ थाम लिया।इसके बाद नेहरू जी के धन्यवाद कहने पर दिनकर जी ने कहा– जब–जब सत्ता लड़खड़ाती है तब तब सदैव साहित्य ही उसे संभालता है। साहित्य में समाहित लोक तत्वों और परम्पराओं की अक्षय शक्ति सत्ता और समाज को दिशाहीन होकर भटकने से रोकती है।

कुंजी शब्द – लोक, परंपरा, उपन्यास, संस्कृति, नाचा, गम्मत ।

इसलिए कलमकारों की रचना में ऐसे मूल तत्वों लोक परम्पराओं का समावेश होना अनिवार्य है। स्वाभाविक है।आज भी सभी भाषाओं के रचनाकारों द्वारा रचित कहानी,कविता नाटक, उपन्यासों में उस क्षेत्र विशेष के लोकतत्वों का प्रभाव किसी न किसी रूप में आंशिक अथवा व्यापक परिलक्षित होता ही है। छत्तीसगढ़ी में रचित उपन्यास भी इस तथ्य से परे नहीं हैं। अछूते नहीं हैं।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 99-105

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों का संसार अभी थोड़ा छोटा है, किन्तु घटाटोप अंधेरी रात में राहगीरों के लिए नन्हा दिया रोशनी बिखेरते पथ प्रदर्शक बनता है। उसी तरह छत्तीसगढ़ी उपन्यासों की भूमिका, उत्कृष्ट है। यहां के नये पुराने उपन्यासकारों ने अपनी लेखनी से,साहित्य की दृष्टि से एक समृद्ध राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ को स्थापित किया है। राज्य गठनोपरांत तो हिंदी के साथ ही साथ छत्तीसगढ़ी साहित्यकारों का कलम बराबरी से चल रहा है।

यह सर्व स्वीकार्य है कि साहित्य में लोक तत्व सदैव स्थापित रहा है।छत्तीसगढ़ी कृतियों की पृष्ठभूमि में भी लोक संस्कृतियों को बड़ी खूबसूरती के साथ पिरोया गया है।इसमें कोई दो राय नहीं है कि लघुकथा,लघु उपन्यास से लेकर वृहद उपन्यासों की रचना करने वाले छत्तीसगढ़ के साहित्यकार हिंदी, मराठी ,बांग्ला भाषी साहित्यकारों से उतने कमतर नहीं हैं जितने कि आंके जाते हैं।

छत्तीसगढ़ का साहित्य संसार बताता है कि स्वतंत्रता के पूर्व और बाद में रचित विविध भाषा के उपन्यासों ने समाज में जागृति,राष्ट्रीय जनजागरण हेतु जिस तरह जनमन को जागृत ,प्रेरित किया, वैसे ही छत्तीसगढ़ी साहित्य का योगदान भी उल्लेखनीय रहा है। ब्रिटिश हुकूमत के आगे डरे सहमे आमजनों के भीतर शौर्य–वीरता की अलख जगाने में सशक्त बारूद जैसे भूमिका छत्तीसगढ़ी साहित्यकारों ने अदा की।लोक जीवन में नवीन चेतना का संचार किया। जिसके बलबूते जनजाति समुदाय शेर की तरह दहाड़ते हुए फिरंगियों से भीड़ जाते थे।

इस कथन के पीछे ठोस तर्क यही है कि किसी भी भाषा के साहित्य का ताना बाना लोक तत्व, परंपराओं,रीति–रिवाज खान–पान सहित सामाजिक,राजनीतिक, धार्मिक परिवेश पर ही केंद्रित होती है। इसके इर्द गिर्द ही विषय वस्तु घूमती है। छत्तीसगढ़ का प्रथम उपन्यास होने का गौरव वर्ष 1926 में पांडेय वंशीधर शर्मा द्वारा लिखित हीरू की कहानी को प्राप्त है।वह भी इस बात की साक्षी है।

आगे छत्तीसगढ़ी में उपन्यास लेखन को गति देने का कार्य वर्ष 1964 में शिव शंकर शुक्ला रचित मोगरा, दियना के अंजोर, के अलावा लखन लाल गुप्त के चंदा अमरित बरसाइस,

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 99-105

ठाकुर हृदय सिंह के फुटहा करम, केयूर भूषण के लिखे उपन्यास कुल के मरजाद, कृष्ण कुमार शर्मा के छेरछरा,लोक लाज, कहां बिलागे मोर धान के कटोरा, मुकुंद कौशल के उपन्यास केरवंछ ,डॉ. आर के सोनी के ऊढ़रिया, रामनाथ साहू के भुइयां ,कका के घर, जनार्दन पांडेय के मोर गांव और डॉ. परदेसी राम वर्मा के आवा उपन्यासों में छत्तीसगढ़ी परिवेश,लोक रंग और ठेठ परंपराओं का असर दिखता है। पूर्णिमा की चांद की भांति आंचलिकता प्रतिविम्बित होती है।

नारी जागरण, नशा पान, विधवा पुनर्विवाह, जात–पांत की दीवार का क्षरण, अंतरजातीय विवाह, पवित्र प्रेम रिश्तों की मिठास छत्तीसगढ़ के प्रबुद्ध साहित्यकारों के उपन्यासों में मिलते हैं। गर्व की बात है कि छत्तीसगढ़ की विदुषी महिला साहित्यकारों ने भी उपन्यास लेखन में अपना लोहा मनवाया है। विदुषी लेखिका सरला शर्मा रचित उपन्यास माटी के मितान ,सुधा वर्मा रचित उपन्यास बन के चंदैनी, शकुंतला तरार रचित उपन्यास बनपांखी,डॉ.शैल चंद्रा लिखित उपन्यास गोदावरी सहित अन्य अनेक लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों,कहानी संग्रहों में छत्तीसगढ़ी संस्कृति, सभ्यता,संस्कार,लोक गीतों पर्वों को समाज के अलग–अलग पात्रों के साथ पिरोया है।

छत्तीसगढ़ी उपन्यास के पात्र सुवा,करमा, ददरिया,रीलो,आदि लोक गीतों की तान लोक वाद्यों की धुन में छेड़ते हुए दृष्टव्य होते हैं। इससे छत्तीसगढ़ी उपन्यासों– कहानियों की रोचकता, संप्रेषणीयता, पठनीयता बढ़ जाती है। चलचित्र की भांति पाठकों की आंखें उन्हें निहारती हैं। अनेक उपन्यासकारों ने समाज में प्रचलित अतार्किक,अवैज्ञानिक, आडंबरों को अमान्य करने और रूढ़िवादी परंपराओं की बेड़ियों में जकड़ी प्रथाओं को नेस्तनाबूत करने की पूरजोर वकालत भी की है।

उपन्यासकारों ने संस्कृति और संस्कारों की जननी नारियों के साथ समाज में हो रहे शोषण, अत्याचार के विरुद्ध भी शंखनाद किया है। नारियों की आत्मनिर्भरता, आर्थिक स्वतंत्रता की महता को समाज में स्थिरता, समरूपता लाने सहित अन्य दृष्टिकोण से आवश्यक निरुपित किया है। जिसका व्यापक प्रभाव छत्तीसगढ़ के बढ़ते चरण के साथ नारी समुदाय में परिलक्षित हुआ है, अनवरत हो रहा है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 99-105

उपन्यास चाहे किसी भी भाषा के हों वे परंपराओं के संवाहक भी होते हैं। वास्तविकता और कल्पना धारित समाज के रंग रेशे में कसे होते हैं। यही वजह है पाठकों के भीतर तरह तरह की भावनाओं को संचारित करते हुए उन्हें बांधे रखते हैं। छत्तीसगढ़ी उपन्यासकारों ने छत्तीसगढ़ के प्रचलित शब्दों, कहावतों, मुहावरों पहेलियों का प्रयोग अपने उपन्यासों में गोरस में घुले गुड़ की भांति किया है,जो कि पाठकों को नवाक्षर का ज्ञान कराते हैं। यह भी कह सकते हैं कि अन्य प्रांत के वासियों को छत्तीसगढ़ी आंचलिक परंपराओं, प्राकृतिक संपदाओं को भली भांति जानने में छत्तीसगढ़ी उपन्यास अत्यंत सहायक हैं।

समय काल परिस्थितियों को देखते हुए छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों ने भी नई लेखन शैली और विषयों की तलाश की है,किन्तु उन्हें भी लोक रंगों परम्पराओं में गूंथे रखा फलस्वरूप कई दशक पूर्व लिखे गए छत्तीसगढ़ी उपन्यासों की खासियत है कि आज भी वे ताजा तरीन होने का बोध कराते हैं।

छत्तीसगढ़ी पुरुष–महिला साहित्यकारों के स्तुत्य प्रयासों से ही छत्तीसगढ़ी साहित्य, लोककला संस्कृति को राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर सम्मानजनक स्थान मिला है। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों की भागीदारी बढ़ी है,फलस्वरूप क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय चौनलों में छत्तीसगढ़ के पर्वों,परम्पराओं,विविध शिल्प कलाओं को विशेष अहमियत मिली है। बालीवुड– छालीवुड में छत्तीसगढ़ी कहानियों पर फिल्म बनाने की पहल हुई है।

गर्व से कह सकते हैं कि छत्तीसगढ़ी साहित्य का उत्तरोत्तर उत्साहजनक विकास हो रहा है। छत्तीसगढ़ी साहित्य के वर्तमान का आंकलन भरपूर भरोसा दिला रहा है कि भविष्य पटल उज्जवल ही होगा। बेशक इस उपलब्धि का श्रेय हमारे पूर्वज मूर्धन्य साहित्यकारों को जाता है। जिन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से छत्तीसगढ़ी भाषा को नई ऊंचाई दी है। आंचलिक लेखन को सही दिशा दशा दी है।

लोक परम्पराओं से समाज मूल जड़ों से भागना ऐसी भूल होती है जो संस्कृति में विकृ ति ला देती है जैसे दूध में पड़ा नीबू का रस दूध को फाड़कर दूध के अस्तित्व को ही छिन्न–भिन्न कर देता है

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 99-105

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों में लोक के वैशिष्ट्य को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं और उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है

छत्तीसगढ़ी उपन्यास लेखन की यात्रा पंडित बंशीधर पांडेय के श्हीरू के कहिनीश (1926) से प्रारंभ मानी जाती है। तब से लेकर आज तक, इन उपन्यासों ने यहाँ के लोक जीवन के विभिन्न आयामों को अपने भीतर समेटा है।

1. लोक–संस्कृति और रीति–रिवाज

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता यहाँ के रीति–रिवाजों का प्रमाणिक चित्रण है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों को उपन्यासकार अत्यंत बारीकी से उकेरते हैं।

त्यौहार– हरेली, पोला, तीजा, और छेरछेरा जैसे त्यौहारों का वर्णन केवल घटना के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता के प्रतीक के रूप में आता है।

संस्कार– विवाह के अवसर पर श्चुलमाटीश, श्मयनश, और श्भाँवरश जैसे विधानों का सजीव वर्णन पाठकों को मिट्टी से जोड़ता है।

2. लोकगीत और संगीत की प्रधानता

लोक तत्वों में गीतों का स्थान सर्वोपरि है। छत्तीसगढ़ी उपन्यासों के पात्र अक्सर अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए गीतों का सहारा लेते हैं। करमा, ददरिया और सुआ आदि लोकगीत उपन्यासों के मध्य में ददरिया की पंक्तियाँ प्रेम और विरह की अभिव्यक्ति करती हैं। सुआ गीतों के माध्यम से नारी मन की व्यथा और करमा के माध्यम से श्रम की शक्ति को दिखाया जाता है। यह संगीत तत्व उपन्यास की पठनीयता को बढ़ाता है और एक संगीतमय परिवेश निर्मित करता है।

3. लोक विश्वास और मान्यताएँ

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 99-105

छत्तीसगढ़ का ग्रामीण समाज लोक विश्वासों और मान्यताओं से गहराई से जुड़ा है। उपन्यासों में इन तत्वों का समावेश यथार्थवाद के साथ किया गया है । टोटके और जड़ी–बूटीरू ग्रामीण अंचलों में प्रचलित पारंपरिक उपचार और श्बइगाश (ओझा) की भूमिका का चित्रण कई उपन्यासों में मिलता है।

लोक देवता– ठाकुर देव, बूढ़ा देव और दंतेश्वरी माई के प्रति अटूट श्रद्धा लोकमानस की आधारशिला है, जिसे कथा साहित्य में सम्मानजनक स्थान मिला है।

4. आंचलिक भाषायी सौंदर्य (लोक भाषा)

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों का वैशिष्ट्य उसकी श्ठिठश (शुद्ध) लोक भाषा में निहित है। मुहावरों और कहावतों (हाना) का प्रयोग कथानक में चमत्कार पैदा करता है।

जैसे – एक हाथ के ककड़ी, नौ हाथ के बीजा जैसी कहावतें लोक बुद्धि की परिचायक हैं।

विभिन्न बोलियों (लरिया, खलटाही, सरगुजिहा) का मिश्रण आंचलिक विविधता को दर्शाता है।

5. लोक पात्रों का सजीव चित्रण

छत्तीसगढ़ी उपन्यासों के नायक–नायिका अक्सर साधारण किसान, चरवाहे या श्रमिक होते हैं। वे शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते हैं, लेकिन अपनी जड़ों को नहीं छोड़ते।

उनका संघर्ष परसा (महुआ के फूल) बीनने से लेकर बड़े जमींदारों से टकराने तक फैला होता है। गजानन माधव मुक्तिबोध और पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जैसे विचारकों ने भी इस आंचलिक चेतना को सराहा है।

परदेशी राम वर्मा का उपन्यास आवा छत्तीसगढ़ी साहित्य के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है। यह उपन्यास केवल एक कथा नहीं है, बल्कि छत्तीसगढ़ की ग्रामीण संस्कृति, संघर्ष और लोक–मानस का जीवंत दस्तावेज है। आवा का अर्थ होता हैकृकुम्हार

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January - 2026 | Page 99-105

का वह पका हुआ भट्ठा जिसमें मिट्टी के बर्तन तपकर मजबूत बनते हैं। लेखक ने इस प्रतीक के माध्यम से समाज के संघर्षों को बखूबी दर्शाया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1 पाठक विनयकुमार, छत्तीसगढ़ी गद्य का विमर्श, प्रयास प्रकाशन, 1998, पृ 23

.2 सोनी डॉ. जे.आर., उढ़रिया पृ.10 राइट

3. शुक्ल शिवशंकर, मोंगरा . 04 राइट,

4. सोनी डॉ. जे.आर., उढ़रिया, पृ. 41 ए.